**राही है हम**

हमने सोचा रास्ते होंगे फूलों के

अरमान होंगे हमारे, सिर्फ अपने उसूलों के

रास्ते तो बहुत पाये हमने फूलो के

पर मंजिल ही जब कांटो में हो, तो कहा खिलोगे फूलों से

अब तो बस अरमान रखते है फूलो के

कांटे भी आ जाये तो गिला नहीं करते अपने उसूलों से

मुह मोड़ कर पलटना हमने कभी सीखा नहीं

राही है हम, कभी हमने ये भुला नहीं

ये तो अरमान है हमारे, जो हमें आगे बढ़ाते है

हमें अपने सपनो की ऒर एक नया सवेरा दिखाते है

रास्ते और भी हसीं लगने लगते है, खिलता नया सवेरा देखकर

राही है हम मुस्कुरा उठते है, कांटो का पतीला देखकर

अब तो कांटो में ही मंजिल हमें नज़र आती है

चलते चलते दिल में फूलो का एहसास दिलाती है

बहुत सुकून मिलता है कांटो के बीच चलकर

राही है हम चल पड़ते है मंजिल का टीला देखकर

**किशोर पाठक**